



## मैहर घराने के राग: एक संगीतात्मक विरासत

कु. श्रेया सुचेता पटवर्धन

(रिसर्च स्कॉलर), गुरु – पं. नित्यानंद हळदीपूर., श्री.ना.दा.ठाकरसी महिला विद्यापीठ, चर्चगेट मुंबई.

मार्गदर्शक – प्रा. डॉ. संगीता बापट (संगीत विभाग प्रमुख)

Email – patwardhanshreya16@gmail.com

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.19543346>

### ARTICLE DETAILS

**Research Paper**

**Accepted:** 29-03-2026

**Published:** 10-04-2026

**Keywords:**

मैहर घराना, उस्ताद अल्लाउद्दीन खान, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, राग नवाचार, राग संरचना

### ABSTRACT

यह शोध-पत्र हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण परंपरा, मैहर घराने के रागों का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है। उस्ताद अल्लाउद्दीन खान द्वारा स्थापित इस घराने ने संगीत के क्षेत्र में नवाचार और परंपरा के संतुलित समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य मैहर घराने में विकसित रागों की संरचना, उनके सौंदर्यात्मक पक्ष, तथा उनके संगीतात्मक महत्व का विश्लेषण करना है। शोध में राग हेमंत, जयंत, जयकौंस, नवरस, जोगिया हेम तथा आनंदिनी जैसे प्रमुख रागों का विश्लेषणात्मक विवेचन किया गया है। इन रागों के माध्यम से स्वर-विन्यास, भाव-अभिव्यक्ति, लयात्मक विविधता और वाद्य प्रस्तुति की विशिष्टताओं को समझने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि इन रागों की रचना केवल तकनीकी प्रयोग नहीं है, बल्कि यह गहन भावानुभूति और कलात्मक दृष्टि का परिणाम है। मैहर घराने के रागों में पारंपरिक राग-व्यवस्था के भीतर रहते हुए नवीनता की खोज स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन रागों ने न केवल वाद्य संगीत की अभिव्यक्ति को विस्तृत किया, बल्कि शास्त्रीय संगीत की शिक्षण पद्धति और प्रस्तुति शैली को भी नई दिशा प्रदान की है। इसके अतिरिक्त, इस शोध में यह भी स्पष्ट किया गया है कि इन रागों ने भारतीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैहर घराने के प्रमुख कलाकारों द्वारा इन रागों की प्रस्तुति ने वैश्विक श्रोताओं को भारतीय संगीत की गहराई और समृद्धि से परिचित कराया है। अंततः, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि मैहर घराने के राग भारतीय शास्त्रीय संगीत की जीवंतता, रचनात्मकता और निरंतर विकासशील प्रकृति के सशक्त उदाहरण हैं। यह शोध संगीत के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में उपयोगी सिद्ध हो

सकता है।

### ● संशोधन पद्धती (Research Methodology) :-

इस शोध-पत्र में गुणात्मक (Qualitative) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसके माध्यम से मैहर घराने के रागों का गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (Secondary Sources) पर आधारित है, जिनमें प्रामाणिक संगीत साहित्य, प्रकाशित शोध-पत्र, ग्रंथ, तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोत शामिल हैं।

इस अनुसंधान में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धतियों का समन्वित रूप से प्रयोग किया गया है। विभिन्न रागों की संरचना, स्वर-विन्यास, तथा भावात्मक विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन कर उनके विशिष्ट तत्वों को स्पष्ट किया गया है।

### ● प्रस्तावना (Introduction) :-

मैहर घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे प्रमुख परंपराओं में से एक है, जो अपनी विशिष्ट शैली, नवोन्मेषी दृष्टिकोण और पारंपरिक तथा आधुनिक तत्वों के समन्वय के लिए जाना जाता है। उस्ताद अल्लाउद्दीन खान द्वारा स्थापित इस घराने ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, विशेष रूप से नए रागों की रचना और पारंपरिक रागों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से। अन्य घरानों के विपरीत, जो मुख्यतः गायन पर केंद्रित थे, मैहर घराने ने वाद्य संगीत को समान महत्व दिया, विशेष रूप से सितार और सरोद पर।

इस घराने की एक प्रमुख विशेषता इसके विशिष्ट रागों की खोज और रचना है। ये राग न केवल तकनीकी कौशल को दर्शाते हैं, बल्कि संगीत की गहरी दार्शनिक और सौंदर्यात्मक समझ को भी प्रकट करते हैं। यह शोध-पत्र मैहर घराने से संबंधित रागों, उनकी विशेषताओं, नवाचारों और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान का अध्ययन करता है। मैहर के कलाकारों ने नई स्वरलहरियों का निर्माण और समन्वय किया, जिसमें पारंपरिक ढाँचों को कल्पनाशील परिवर्तनों के साथ जोड़ा गया। ये नए राग तकनीकी कौशल, गहन संगीत ज्ञान और भावात्मक अभिव्यक्ति की खोज को दर्शाते हैं, जो प्रस्तुति और तात्कालिक रचना (इम्प्रोवाइज़ेशन) के लिए नए आयाम प्रस्तुत करते हैं।

यह शोध-पत्र मैहर घराने द्वारा प्रस्तुत नए रागों का अध्ययन करता है, जिसमें उनकी संरचना, विशेषताएँ, भावात्मक प्रभाव और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान का विवरण दिया गया है।

### ● मैहर घराने की ऐतिहासिक पार्श्वभूमी :-

मैहर घराने का उदय 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ, जब उस्ताद अल्लाउद्दीन खान ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक नई दिशा प्रदान की। उन्हें सेनिया, रामपुर-सेनिया और ग्वालियर जैसी प्रमुख संगीत परंपराओं का गहन प्रशिक्षण प्राप्त था, जिसके कारण उनकी संगीत दृष्टि अत्यंत व्यापक और बहुआयामी बनी। इन विविध परंपराओं के समन्वय ने उनके व्यक्तित्व और शैली को विशिष्ट बनाया, जो आगे चलकर मैहर घराने की पहचान बनी।



मध्य प्रदेश के मैहर राज्य में बसने के पश्चात वे दरबारी संगीतकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए। यहाँ उन्होंने न केवल अपने संगीत कौशल का प्रदर्शन किया, बल्कि एक सशक्त गुरु-शिष्य परंपरा की स्थापना भी की। उनके मार्गदर्शन में अनेक प्रतिभाशाली शिष्य तैयार हुए, जिनमें पंडित रवि शंकर, उस्ताद अली अकबर खान, विदुषी अन्नपूर्णा देवी, विदुषी शरण रानी, पं. पन्नालाल घोष, पं. निखील बॅनर्जी जैसे महान कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संगीत को नई पहचान दिलाई।

इस घराने की प्रमुख विशेषता लयकारी, आलाप की गहराई, तथा गायन और वादन दोनों में तकनीकी शुद्धता और कठोर साधना पर विशेष बल देना रहा है। उस्ताद अल्लाउद्दीन खान ने अपने शिष्यों को केवल रागों का अभ्यास ही नहीं कराया, बल्कि संगीत के प्रति एक अनुशासित और आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी विकसित किया।

नए रागों की रचना इस घराने की प्रयोगशील प्रवृत्ति का महत्वपूर्ण अंग थी। इसमें पारंपरिक रागों के स्वरूप को आधार बनाकर, नए स्वर-विन्यास, विशेष चलन और अभिनव प्रस्तुति शैली के माध्यम से अद्वितीय संगीतात्मक अभिव्यक्तियाँ विकसित की गईं। इस प्रकार मैहर घराना परंपरा और नवाचार के संतुलन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

#### ● राग नवाचार का ऐतिहासिक संदर्भ :-

उस्ताद अल्लाउद्दीन खान का यह दृढ़ विश्वास था कि संगीत एक गतिशील कला है, जिसे समय के साथ विकसित होना चाहिए, किंतु इसकी जड़ें शास्त्रीय सिद्धांतों में दृढ़ रहनी चाहिए। उनके अनुसार, संगीत में नवाचार तभी सार्थक है जब वह परंपरा की मूल संरचना और व्याकरण का सम्मान करता हो।

मैहर में अपने दरबारी कार्यकाल के दौरान उन्होंने विभिन्न पारंपरिक रागों का गहन अध्ययन किया और उनके स्वर, भाव तथा संरचना को समझकर उनमें नए प्रयोग किए। उन्होंने कई बार दो या अधिक रागों के विशिष्ट अंगों को संयोजित कर नए रागों का निर्माण किया, जिससे संगीत में नवीनता और ताजगी का संचार हुआ।

इन नवाचारों को उनके शिष्यों ने आगे विकसित किया। उन्होंने न केवल इन रागों का मंचीय प्रदर्शन किया, बल्कि उन्हें व्यवस्थित रूप देकर संगीत जगत में स्थापित भी किया।

नए रागों की रचना का उद्देश्य केवल तकनीकी कौशल का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि इसके माध्यम से नए भावों की अभिव्यक्ति, नए स्वर-रागों की खोज, तथा वाद्यों—जैसे सितार, सरोद और सुरबहार—की अभिव्यक्तिक क्षमता का विस्तार करना भी था। इस प्रक्रिया ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अधिक समृद्ध, संवेदनशील और व्यापक बनाया।

#### ● मैहर घराने के नए रागों की विशेषताएँ :-

मैहर घराने में निर्मित रागों में कुछ विशिष्ट और समान गुण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जो इस घराने की पहचान को परिभाषित करते हैं।



- सबसे प्रमुख विशेषता नवीन स्वर संरचना है, जिसमें स्वरों के ऐसे संयोजन देखने को मिलते हैं, जो पारंपरिक रागों की सीमाओं से आगे बढ़कर नए आयाम प्रस्तुत करते हैं। प्रायः ये राग दो या अधिक रागों के तत्वों के समन्वय से निर्मित होते हैं, जिससे एक नवीन, किंतु संतुलित संगीतात्मक स्वरूप उत्पन्न होता है।
- दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इन रागों की भावात्मक गहराई है। प्रत्येक राग किसी विशेष रस—जैसे भक्ति, विरह, शांति या आनंद—को अभिव्यक्त करने के लिए निर्मित किया गया है। इस कारण इन रागों की प्रस्तुति केवल तकनीकी नहीं, बल्कि अत्यंत भावपूर्ण और संवेदनशील होती है।
- तीसरी विशेषता लयात्मक लचीलापन है। इन रागों में जटिल लयकारी की पर्याप्त संभावनाएँ होती हैं, जिससे कलाकार को तात्कालिक रचना (इम्प्रोवाइज़ेशन) और रचनात्मकता प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है।
- चौथी विशेषता वाद्य प्रधानता है। मैहर घराने के अधिकांश राग विशेष रूप से वाद्य संगीत—विशेषकर सितार और सरोद—को ध्यान में रखकर विकसित किए गए हैं। इन रागों की संरचना इस प्रकार की होती है कि वे वाद्य वादन की तकनीकी क्षमता और सौंदर्य को पूर्णतः अभिव्यक्त कर सकें।
- अंततः, संयोजन या (Hybridization) दो या अधिक चीजों को मिलाकर एक नया रूप तैयार करना इस घराने की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इसमें विभिन्न रागों की विशेषताओं को इस प्रकार जोड़ा जाता है कि नया राग न केवल तकनीकी दृष्टि से सशक्त हो, बल्कि सौंदर्य की दृष्टि से भी संतुलित और आकर्षक बना रहे।
- **मैहर घराने में निर्मित प्रमुख नए राग :-**

मैहर घराने के कलाकारों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा से अनेक रागों एवं तालों की रचनाएँ की हैं।

- **उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ साहब द्वारा निर्मित राग :-**

हेम बिहाग, हेमंत, मांझ खमाज, मदन मंजरी, प्रभाकली, शोभावती, दुर्गेश्वरी, धवलश्री, भुवनेश्वरी, केदार मांझ, मोहम्मद, चंडिका, कौशी भैरव, भगवती, माधवगिरी, सुरसती, हेमंत भैरव, गांधी भैरव, हेमंती.

- **उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ साहब द्वारा निर्मित ताल :-**

मोहन ताल (साढ़े तीन मात्रा), राजवेश ताल (साढ़े चार मात्रा)

उदयसिंह ताल (साढ़े पाँच मात्रा), विजय ताल (साढ़े छे मात्रा)

विजयानंद ताल (साढ़े सात मात्रा), उपराल ताल (साढ़े आठ मात्रा)

विक्रमा ताल (साढ़े नौ मात्रा), लाधुकीर ताल (साढ़े दास मात्रा)

रंग ताल (साढ़े ग्यारह मात्रा), रंगवरण ताल (साढ़े बारह मात्रा)



रंगरयात ताल (साढ़े तेरह मात्रा), अभिनन्दन ताल (साढ़े चौदह मात्रा)

- **उस्ताद अलीअकबर खाँ साहब द्वारा निर्मित राग :-**

चंद्र नंदन, गौरी मंजरी, लाजवंती, मिश्र शिवरंजनी, भूपमांड, माधवी, हेमहिंडोल.

- **पं. रवी शंकर जी के द्वारा निर्मित राग :-**

जोगेश्वरी, कामेश्वरी, परमेश्वरी, तिलकशाम, नटभैरव, बैरागी तोड़ी, जनसम्मोहनी, रंगेश्वरी, गंगेश्वरी, बैरागी भैरव, मनमंजरी, सुररंजनी, अहिरी ललत, पलास काफी, चारुकेशी, कौशिक तोड़ी, भवानी भैरव, सांझ कल्याण, यमन मांझ, पंचम से गारा, मिश्र गारा, पिल्लूबंजारा, लूम, सैलांगी, राजकल्याण.

- **पं. पन्नालाल घोष द्वारा निर्मित राग :-**

दीपावली, चंद्रमौली, नुपुरध्वनी.

- **मैहर रागों की प्रस्तुति तकनीकें :-**

मैहर घराने के रागों की प्रस्तुति एक विशेष शैली और गहन साधना पर आधारित होती है, जिसमें तकनीकी प्रवीणता और भावात्मक अभिव्यक्ति का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। इस घराने में राग प्रस्तुति केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि एक गंभीर संगीत साधना मानी जाती है।

सबसे प्रमुख तकनीक **आलाप का विकास** है। आलाप के माध्यम से राग का क्रमिक और विस्तारपूर्वक परिचय कराया जाता है, जिसमें लय का बंधन नहीं होता। कलाकार धीरे-धीरे स्वरों का विस्तार करते हुए राग की प्रकृति, भाव और स्वर-संरचना को स्पष्ट करता है। मैहर घराने में आलाप अत्यंत गहन, शांत और ध्यानपूर्ण होता है, जो श्रोता को राग के भावलोक में प्रवेश कराता है।

इसके बाद **जोड़ और झाला** की प्रक्रिया आती है। जोड़ में लय का सूक्ष्म समावेश होता है, जिससे राग की गति धीरे-धीरे बढ़ती है। झाला में यह गति और अधिक तीव्र हो जाती है, जहाँ कलाकार अपनी तकनीकी क्षमता, नियंत्रण और त्वरितता का प्रदर्शन करता है। यह भाग विशेष रूप से वाद्य संगीत में अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है।

**गमक और मींड** इस घराने की प्रस्तुति के अत्यंत महत्वपूर्ण अलंकार हैं। मींड के माध्यम से एक स्वर से दूसरे स्वर तक सहज और निरंतर संक्रमण किया जाता है, जिससे राग की मधुरता और गहराई बढ़ती है। गमक के प्रयोग से स्वरों में कंपन और बल उत्पन्न होता है, जो राग की भावात्मक अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाता है।



लयकारी भी मैहर घराने की एक विशिष्ट पहचान है। इसमें कलाकार विभिन्न लयबद्ध प्रयोगों, तिहाइयों और जटिल ताल संरचनाओं के माध्यम से अपनी रचनात्मकता और तालबोध का प्रदर्शन करता है। लयकारी के माध्यम से प्रस्तुति में विविधता और रोचकता उत्पन्न होती है।

अंततः, पारंपरिक और नवीन तत्वों का समन्वय इस घराने की प्रस्तुति शैली की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। कलाकार राग की मूल संरचना और परंपरागत नियमों का पालन करते हुए उसमें नवीन प्रयोगों का समावेश करता है, जिससे प्रस्तुति में ताजगी और विशिष्टता बनी रहती है।

#### ● भारतीय शास्त्रीय संगीत पर प्रभाव :-

मैहर घराने के रागों और प्रस्तुति शैली का भारतीय शास्त्रीय संगीत पर अत्यंत गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस घराने ने संगीत की परंपरा को समृद्ध करने के साथ-साथ उसमें नवीनता का समावेश भी किया है।

सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव रागों के भंडार के विस्तार के रूप में देखा जाता है। मैहर घराने में अनेक नए रागों की रचना की गई, जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत की स्वर-संपदा और अधिक समृद्ध हुई। इन रागों ने संगीतकारों को नए प्रयोग करने और रचनात्मकता विकसित करने के अवसर प्रदान किए।

दूसरा प्रमुख प्रभाव वाद्य संगीत में नवाचार के रूप में सामने आता है। इस घराने ने सितार, सरोद और सुरबहार जैसे वाद्यों की तकनीकी और अभिव्यक्तिक क्षमताओं को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। वाद्य संगीत को एक स्वतंत्र और सशक्त प्रस्तुति माध्यम के रूप में स्थापित करने में मैहर घराने का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

शिक्षण पद्धति में विकास भी इस घराने की एक महत्वपूर्ण देन है। गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत गहन अभ्यास, अनुशासन और सूक्ष्म मार्गदर्शन पर बल दिया गया, जिससे विद्यार्थियों में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ भावात्मक संवेदनशीलता का भी विकास हुआ।

इसके अतिरिक्त, मैहर घराने ने भारतीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस घराने के कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठा को विश्व स्तर पर स्थापित किया।

अंततः, इस घराने ने संगीतकारों को नए रागों की रचना और प्रयोग के लिए प्रेरित किया। इसने यह सिद्ध किया कि परंपरा का सम्मान करते हुए भी नवाचार संभव है, और यही दृष्टिकोण भारतीय शास्त्रीय संगीत को निरंतर विकसित करता है।

#### ● निष्कर्ष (Conclusion) :-

इस अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित होता है कि मैहर घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक अत्यंत समृद्ध और प्रभावशाली परंपरा है, जिसने संगीत के क्षेत्र में नवाचार और परंपरा के संतुलित समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।



उस्ताद अल्लाउद्दीन खान के मार्गदर्शन में विकसित इस घराने ने न केवल पारंपरिक रागों की गहन व्याख्या की, बल्कि अनेक नवीन रागों की रचना कर संगीत की स्वर-संपदा को व्यापक बनाया।

इस शोध के माध्यम से यह भी ज्ञात होता है कि मैहर घराने के राग केवल तकनीकी संरचना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे गहन भावात्मक अभिव्यक्ति और सौंदर्यात्मक अनुभूति के सशक्त माध्यम हैं। रागों की प्रस्तुति में आलाप, लयकारी, मींड और गमक जैसे तत्वों का प्रभावी उपयोग इस घराने की विशिष्टता को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, इस घराने की वाद्य प्रधान परंपरा ने सितार, सरोद और सुरबहार जैसे वाद्यों की अभिव्यक्ति को नई दिशा प्रदान की है। इसके परिणामस्वरूप भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्राप्त हुई है।

मैहर घराने की शिक्षण पद्धति और राग नवाचार की परंपरा ने संगीत के विद्यार्थियों और कलाकारों को सृजनात्मकता, अनुशासन और गहन साधना के महत्व को समझने की प्रेरणा दी है। यह घराना इस बात का सशक्त प्रमाण है कि संगीत एक जीवंत और निरंतर विकसित होने वाली कला है, जिसमें परंपरा और नवाचार दोनों का समान महत्व है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि मैहर घराने के राग और उनकी प्रस्तुति शैली भारतीय शास्त्रीय संगीत की अमूल्य धरोहर हैं, जो भविष्य में भी संगीतकारों और शोधकर्ताओं को प्रेरित करते रहेंगे तथा संगीत की परंपरा को समृद्ध करते रहेंगे।

#### ● संदर्भ सूची :-

- 1) वर्मा, संजय कुमार. (2015). मैहर घराने की संगीत परंपरा. वाराणसी: कला प्रकाशन.
- 2) यादव, ममता. (2022). उस्ताद अल्लाउद्दीन खान एवं उनके प्रमुख शिष्यों की वादन शैली. नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशिंग हाउस.
- 3) भारद्वाज डॉ. विकास. (२०१८) बाँसुरी वादक पंडित पन्नालाल घोष. नई दिल्ली. कनिष्क पब्लिशिंग हाउस.
- 4) शर्मा डॉ. (श्रीमती) शान्तनु. (२००५) प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद वादकों की साधना और संघर्ष. नई दिल्ली. कनिष्क पब्लिशर्स.
- 5) मिश्र डॉ. लालमणी. (२०२०) भारतीय संगीत वाद्य. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन ग्रुप.
- 6) विदुषी अन्नपूर्णा देवी जी का लिया हुआ साक्षात्कार |
- 7) पं. नित्यानंद हळदीपूर जी का लिया गया साक्षात्कार।
- 8) उस्ताद आशिष खान सहाब का लिया हुआ साक्षात्कार।
- 9) पं. बसंत काबरा जी का लिया हुआ साक्षात्कार।